तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन।
निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे।। ६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में पहुंचने पर पता चलेगा कि कयामत के दिन की पहचान तुम्हें किसने कराई? कुलजम सरूप की वाणी से दुनियां के जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करने की शोभा खेल में तुमको इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने दी है, जिसकी खबर आज तक किसी को नहीं थी। इस बात की पहचान न्याय करने वाले श्री प्राणनाथजी महाराज करा रहे हैं।

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए।
कूवत तिन समें कहुंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए।। ७ ।।

न्याय के दिन कोई भी किसी को लाभ नहीं दे सकेगा और न ही दुःख-सुख में मददगार बन सकेगा। तब किसी की भी इलम, चतुराई नहीं चलेगी। कर्मों के हिसाब से ही सबको न्याय मिलेगा।

हुकम हादी का साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान।
मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाएं।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो कुरान में फरमाया था, उसके रहस्यों को श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से खोल दिया है। उससे पारब्रह्म अक्षरातीत धाम धनी तथा मोमिनों की पहचान हो गई है। ऐसे ही यकीन वाले मोमिनों को ही प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ में शामिल कर रहे हैं।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएं खोल्या मुसाफ मगज।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई।। ९ ।।

जब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए, तब मोमिन का हज (तीर्थ स्थान) परमधाम है और रोजा दुनियां को छोड़कर अपने श्री राजजी के चरणों में समर्पित करना है, जाहिर हो गया। तब श्री प्राणनाथजी ने यह सभी बातें छत्रसालजी महाराज को समझाईं और परमधाम के बारह हजार मोमिनों का सिरदार "अमीरुल मोमिन" बनाया।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध।। १ ।।

नवीं सदी के आगे दसवीं सदी खुशी का दिन कहा है (ईसा रूह अल्लाह का आना कहा है)। दसवीं सदी के आगे ग्यारहवीं सदी में सब लीला हुई। ग्यारहवीं सदी के अन्दर तारतम ज्ञान आया। कुलजम सरूप की वाणी उतरी। मोमिनों की जागनी शुरू हुई। श्री प्राणनाथजी विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरुल्जमा इमाम मेंहेंदी साहेब जाहिर हुए। यह बात कुरान में कई तरह से लिखी है।

ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार।। २ ।।

ग्यारहवीं सदी के अन्दर ही जागनी के काम का विस्तार हुआ। सभी सिरदार (प्रधान) शाकुण्डल, शाकुमार, ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि संसार में प्रगट हुए। ग्यारहवीं सदी में ही कुलजम सरूप की वाणी और परमधाम की सब न्यामतें श्री राजजी महाराज ने दीं।

Nijanand App

छिपा था बुजरक बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई कयामत।
अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार, पीछे बारहीं में जले बदकार।। ३ ।।

इस कयामत के दिन की जानकारी जो आज दिन तक किसी को नहीं थी, वह अब श्री प्राणनाथजी महाराज ने जाहिर कर दी है। ग्यारहवीं सदी में मोमिनों को अखण्ड सुख मिला और बारहवीं सदी में दुनियां वाले पश्चाताप की अग्नि में जले।

जिन पाई राह रोज कयामत, सो उठे फजर के नूर बखत।
फजर पीछे जब ऊग्या दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन।। ४ ।।

जिन मोमिनों तथा ईश्वरीसृष्टि को कयामत के दिन की पहचान हो गई, उनको कुलजम सरूप की वाणी से मूल घर की पहचान हुई। कुलजम सरूप की वाणी से अज्ञानता के अन्धकार को मिटाकर सवेरा हो गया। फिर जब हादी श्री प्राणनाथजी महाराज अन्तर्ध्यान हुए, तब सभी हाय-तोबा करने लगे कि श्री प्राणनाथजी आए थे और हम पहचानकर सुख न ले सके।

तब तो दरवाजा मूंद के गया, पीछे तो नफा काहू को न भया।
सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील।। ५ ।।

जब तक अन्तर्ध्यान नहीं हुए थे, तब तक एक बन्दगी का हजार गुना फल मिलता है। अन्तर्ध्यान होने पर तोबा का दरवाजा बन्द हो गया। अब उतना ही लाभ मिलेगा जितनी बन्दगी करोगे। सारी दुनियां पश्चाताप करती रही कि श्री प्राणनाथजी आए और हमने पहचाना नहीं। बारहवीं सदी के बाद जब सब देवी-देवता और अजाजील फरिश्ता पश्चाताप के बाद निर्मल हो गए, तब असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि से अजाजील को होश में लाएगा।

एक सूरें उड़ाएके दिए, दूसरे तेरहींमें कायम किए।
यों कयामत हुई जाहेर दिन, महंमदें करी उमत रोसन।। ६ ।।

असराफील फरिस्ते ने श्री प्राणनाथजी के अन्दर जाहिर होकर पहला सूर ग्यारहवीं सदी सम्वत् १७३५ में फूंककर बड़े-बड़े धर्माचार्यों और काजियों के अहंकार को समाप्त किया और कुरान में छिपे रहस्यों को खोलकर कयामत के निशानों को जाहिर कर दिया और कयामत को जाहिर कर दिया तथा मोमिनों और ईश्वरीसृष्टि का आना संसार में जाहिर कर दिया और दूसरे सूर से तेरहवीं सदी में कायमी करने का काम शुरू हुआ।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५३१ ॥

॥ प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ॥

॥ प्रकरण ॥ ५२७ ॥ चौपाई ॥ १८७५८ ॥

॥ बड़ा कयामतनामा सम्पूर्ण ॥

॥ श्री कुलजम सरूप सम्पूर्ण ॥

Nijanand App